नं० ५४६३ - घ

क) सूर्यपुराणम् पत्राणि १०

(ख) धर्मसंवाद → " ८

१८ पत्राणि

संपूर्णम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुर्जपुराण सूर्यपुराणम्

नं० ६५५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

P—18

S473

Part 1st - F — 10

Part - 2nd. F — 8

Total # F. 18

Complete.

Shiv

नं० ५८६३-घ

(क) सूर्यपुराणम् (हिन्द्याम्) पत्राणि १० (दश)

(ख) धर्मसंवाद: (हिन्द्याम्) पत्राणि ८ (अष्ट)

सर्वाणि पत्राणि १८

(सम्पूर्णम्) (पुराणेतिहासः)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सू॰ १॰ १

ॐनमः सूर्याय॥ दोहा॥ ॐवंदौं वरणाहृदै धरी भक्तिप्रेमलिवलीन
महिमाअगमअपारहै साहिवतानप्रवीन १ वंदौंवरणोरकर श्री
पतिगौरिगणेश तुलसीदासकहतेमनम वरनौंकथादिनेस
चौपई॥ श्रीसूरजदेवतासिमरौंतोही सिमरतज्ञानबुद्धिदेमोही सो
तिस्वरूपआदितवलवाना तेजप्रतापतमअग्निसमाना तमआदि
तपरमेश्वरस्वामी अलखनिरंजनअंतरजामी वरनिनजाइज्योति
केलीला धर्मधुरंधरपरमसुसीला ज्योतिकलाचक्रऔरविराजै
कगमगकाननकुंडलछाजै नीलवरनछवितुरैअसवारी ज्ञानध्या
नधर्मव्रतधारी परमपुनीतआदितअविनासी अजैअनादिस।
कलघटवासी नामकथामैंकहौंवखानी सोपुरुषहैअग्निसमानी
महिमाआदितअगमअपारा तीनोंभुवनज्योतिउजीयारा॥ दोहा॥

H. E. PRINO RAM SINGH JUMBOO.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आदितकथापुनीतहै गावहिंजेसुमुजान तीनलोककछुविदुजोतहै कर
हिप्रलापवखान॥ चौपई ॥ सुनहुउपमाआदितपरतापा वरनोविमल।
सुजेकेतापा नाथमहातमसुनहुभवानी कहोंकथापुनीतसुभवानी
गिरिजासुनहुकथामनुलाई मैतोहीग्रथकहोंसमुझाई वाकसुनैपैक
मासपुराना मनवचकर्मसुनैधरिध्याना द्वादसाव्रतकरैइतवारा नेम।
धर्मसोकरैअहारा कुसविछाइकरैविस्रामा हरषितलेहिसुजेकेना
मा इतनीटेकधरैत्रियानवही होहिदयालदयानिधितवही मिथ्या
वचनकहौनहितोही मनवचकर्मनोइछैमोही निहचैप्रेमव्रतहोइ
वलवाना धीरहुइधरज्ञाननिधाना नासैजीतिसकैनहिकोई विद्या
वानगुणवंतवडहोई॥ दोहा ॥ वाफकथामनलायकै टेकधरैव्रत।
ध्यान निहचैपावपुत्रहोइ जोधाअग्निसमान॥ इति श्री सुजेमहा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सू॰ पु॰ १

2

स्येमहापुराणेवाकपुत्रनामप्रथमोध्यायः ॥१॥ चौपई ॥ सूर्जकथाहै
अमृतबानी मनअस्थिरकैसुनहुभवानी कुष्टबरनहोइ जोकेअंगा
सोइहुकथाकरैअसंगा रविदिनभोजनकरैअलोना पहूपमलबावचश
वैदोना विप्रबुलाइकेहोमकरावै बोहीभस्मलैअंगलगावै निहचैकु
ष्टबरनछुटेजाई पंचमहिमाहैसूर्जगुसांई ॥ दोहा ॥ जोकेअंगकुष्टहोइ
सोइहुसुनैपुरान निहचैसूर्जप्रतापतेपावैकायादान ॥ इति श्रीसूर्जे
महात्म्येमहापुराणेकुष्टीकायाबनवरनोनामद्वितीयोध्यायः ॥२॥ चौ
पई ॥ सूर्जकथामेकहौंबुझाई मनबचकर्मेसुनहुचितलाई जोकेब
रनअंगमहहोई अस्थिरकथापढेनरसोई जोकेहगाडपरेअतिभारी
सोइहुकथाकरेअनुसारी पांचब्रतनरकरेइतवारा मनबचकर्मेकथा
अनुसारा अगारचंदनलेपनकरई नितदिनध्यानसूर्जपरधरई निहा ३

वैसकलवरनमिटजाई ऐसमहिमाहैसूरजेशगसाई ॥दोहा॥ जोकेवरनअंगग
महसोनितसुनैपुरान ऐसप्रतापअदितकर महिमाकरोवषान ॥इति
श्रीसूर्जेमहात्मेमहापुराणेअंगवरनोनामतृतीयोध्यायः ॥३॥ चौपई ॥
सूर्यकथामैकहौंबषाई आदित्यकेसुनहुमनलाई जोनरहोइअंधा।
होयलोचन सोयहकथासुनैदुखमोचन निसदिनकरैअलोनअहारा
विविधिभांतिकरैनेमअचारा पीपलवृक्षतरसुनैपुराना पावैलोच।
नअंधवलवाना अंधालोचननिहचैपावै जोइहिकथासुचितलगा
वै ॥दोहा॥ अंधालोचनपावैजोजानैप्रभुएक पुलकितप्रेमपुनीततै
धरैकथापरटेक मनवचकर्मअनुरागगहिकभोजनकरैअलोना रवि
दिनहरषिसुनैचीतमनपहुपचढावैदोना ॥इति श्रीसूर्जेमहात्मेमहा
पुराणेअंधालोचनपावनोनामचतुर्थोध्यायः ॥४॥ चौपई ॥ नाना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सू: कोरनरवेदविदेसा सोयहपेइपुराणसुरेसा निहचैतासुसकलसिद्ध
म: होई लाभपुवनवलिप्रावैसोई नाकहरिनहोइअतिभारी सोयहकथा
३ रैअरुसारी निहचैरिनसकलमिटजाई येसुमहिमाहैसूर्यगसोई॥दोहा
3 नाराकरनवलेजव सोयहसुनैपुराण निहचैसकलमनोरथ पुरवै।
श्रीभगवान॥इतिश्रीसूर्जमहात्म्येमहापुराणेयाराकरननामपंचमो
ध्यायः॥५॥चौपई॥सुनहुउमामैकहौउपाई मनवचकर्मसुनहुचित
लाई ऐसेमहिमाआदितदेवा नासुकारहिसुरनरमुनिसेवा मेटैगा।
दुसकलतनतासु पुलकिप्रेमहितहरषिहुलासु हीनानाथनिरंजन
साई महिमासुखेनवरनिनजाई सुनैकथामैकहौउपाई मनवचा।
कर्मसुनहुमनलाई देउवनदेहीनरपुनकेध्याना सोनातलेयहकथा
समाना तेजप्रतापवरनिनजाई सुनैकथापढैमनलाई कहहिसंभ ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पेहकथापुनीता सुजसप्रतापमैभयेउजीता ॥ दोहा ॥ असिमहिमाश्रा
हितकरवरनोपरमउछाह सुनहुउमापुलकिततन कीरतिप्रभुश्रीरा
ह ॥ चौपई ॥ कहोकथापुनीतसुभवानी छठीमहातमसुनहुभवानी
कातिककैवतपुनीतवहुभारी साजहिअर्थसकलनरनारी अगारवेदन
कहरकीवानी एनानाथकरहिवहुभांती जोमनकामनाउरमहरा
है पुलकथानपरिसुवतैभाषै सोकारनसरवहीभगवाना ऐसेही
प्रभुज्ञाननिधाना ॥ दोहा ॥ लीलाअगमअपारहै कृपासिंधुभगवान
कहोकथापुनीतअति सुनअसियरपरिध्यान ॥ इति श्रीसूतेमहात्मे
महापुराणे छठीमहात्मवर्णनंनामषष्टोध्यायः ॥ ६ ॥ चौपई ॥ सुन
हुउमाअबचरितअपारा नाथकथावरनोविस्तारा सिंघलदीपयेक
नगरकोनामा नेहांवसतिएकीछिनरामा महापुनीतधर्मउपकारी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्व॰ नाम्रभवनएककंन्याकुआरी सोनिनिकैसज्जेकीरजा सवैसज्जेओर
पु॰ नेहिहना प्रेमभक्तिक्यामनलावै निसदिनटेकसज्जेपरलावै इसकार
४ नप्रमत्रगसांई सेवहिसुनमनचितलाई नामभवनप्रभुकरहिकलेवा
५ तीनभुवनकोउपावनमेवा एकसमैप्रवरसन्नग्रसभयेउ कन्यासरयिगि
तीरहिगयेउ मज्जनकरनलगेसोइवाला हदैविराजतमोतीयनकीमा
ला तेहिप्रेनरविषिनारदआयो कंन्यादेषिमुनिवहुतललचायो राफम
पेमुनिसुरसरतीरा लीईउठाइनकंन्याकरवीरा कन्याजलमोकहनतउ
कारा प्रवरदेहुप्रकरिषिहमारा कहानारदसुनकन्यावाला हमसन
करहुउरूपकरवाला सनमुनितमरीसानवीगाइ प्रेमेवचनकरेउक
होजाई मोहिप्रभकंन्यालाषपवीमा प्रेमेवचननकहोमुनीमा प्रव
विनतीसुनहुमममवानी प्रवरदेहुतमहिममत्तानी दोहरा ॥ नगन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारिजलमोंरहै मुनिसोकरैकरजोरी कृपाकरहुफलकितन प्रेवर·
दीजैमारी ॥चौपई॥ जवकंन्यावहुविनतीलाई तेहिछिनमुनितवगोपल
जाई प्रेवरदैमुनिभवनसिधाये तेहअवसरमेकरतहांआये मगुनिम
नमयबगतकीहा सोआदितसोकरहैवेलीहा तहांमैकरतरहीइमना।
ना मुनिप्रेवरलैगोपग्रत्ताना ताहिसमेआयेशिवभोरा सेगउमाजम
वेदवकोरा सकलसहितनोपउमाथा इक्षासकलतवत्रिभुवननाथा।
ऊमलकहातवसिवमुसकाई वैठेतवप्रभुकहातुफाई इक्षाप्रभुरि
तवशिवकरजोरी नाथसुनोपकविनतीमोरी कवाप्रपराधकियोमु।
निभारी सोमोसोंप्रभुकहुविचारी तवप्रभुकहामनहुहोभोरा कन्याए
छतसोसेवकमोरा सोयवमुझसनिकरत्ताना दिष्टविलोकीमुनिक
रध्याना इहकारनमुनिसापजोदियउ तेहितेप्रेगवरनमुनिभयउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सू: पु: ५ 5

इतनामसुनिसिवमनभ्रमकाने दिष्टभुलानेउमनप्रसाने सुननुवचन
प्रभुक्रोधितनभएउ कंन्यासहितनवमुनिपहगएउ ॥दोहा॥ मुनिसोंकहा
ववननव क्रोधकीनुमनलाई श्रमकोतककनमकिया सोमोहिकहहु
जाई ॥चौपई॥ नवमुनिकरजोरीवचनसुनाए परोपदकमलसुजेगुन
गाए कहामुनिप्रभुसुनवचनहमारी मोसोहुकछुभईअधिकारी इहप्र
परापतीमहुप्रभुमोरी विनवौंनाथकरौंकरजोरी नवप्रभुकहासुन
हमसवानी इहांकेलोकसकलगुरज्ञानी नेप्रवसुनिममलेहसापा
नवकेउनममेगहपापा ॥दोहा॥ तीनभुवनमहसामीरवि सोतिकीन
परगास हरषितकथागुणगाउं जहांसूर्जकेवास इति श्री सूर्जमहात
मे महापुराणे कथाराजापरीछित नारदकंन्यासापदेहोवरनोनामसप्त
मोध्यायः ॥७॥ चौपई ॥ पंपापुरएकनगरकानाउ हलपरविप्रराजाबैठा ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उ नग्रवसैमानहूकैलासा धर्मकथ्यातहांहोइप्रकासा एकनामुनिकीक
रौंदिनराती निसदिनटेकपरैवहुभाती कोटिअग्रवागोदिसतहां श्रोत
नेकेआश्रमजहां तहांतहांअवेडितसुहावा वागेंद्वारसौवरनवधावा
तहांथंभेएकवडविसाला सोनेनममोरहेपताला वोहीथंभआदित।
करवासा आनहिथंभसोलागिप्रकासा पेहिविधिआदितआवहिनाहीं
सनहूकथाउनीतमनमाहीं मैतोहीप्रथेकहोमसुकारे आदितकथा
पढैमनलाई ॥ अस्तुती ॥ थंमआदितपरमेसुर महिमाअगमअपार
तीनभुवनतममभागे भयेमकलउजीयार। कुष्टिध्यानमनलावै
पावैकायादान प्रमप्रभुस्वामीअंतरजामी कृपाकरहूभगवान जो
नरकुष्टअतमनलावैमनवचकर्मअनुमान सुरनरमुनिसवयसत।
निकरहि प्रमसहोहिवलवान सवगुनआगारसीलसुसागर नमउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सू॰ पु॰ ९ नागरनृपतिधान सुनवचनकर्मनेहरषित मज्जनकरहिवषान॥इ
6
ति श्री सूर्जे महात्म्ये महापुराणे पंपापुरराजा हलधरविप्रकथावरनो ना
म अष्टमो ध्यायः॥८॥ चौपई॥ गिरिजासुनुकथामनलाई पूरबदिसा
तहांउगहिसुमाई पूरबदिसाएकश्रीपुरदेसा तहांकेराजारूपमहेसा
करहिसदाआदिनकरपूजा नाहिसमानकोउभक्तनदूजा पाहिविधि
सकलनगरउजयारा तहांशहरएकवडाविस्तारा हजारकोसपर्वतप
रमाना तहंसंवमेआदितवलवाना होईपहारतहांकरहिनिवासा फिर
पश्चिमदिसप्रेमहुलासा मनवचकर्मकथामनलाई सूर्जेचरित्रमेंतुम्हा
हिसुनाई सुनिगिरिजावक्रीतभवानी नेनप्रणामपुनिमनमुसकानी पे
यआदितजोकीयहुलीला यमिपुरंपरपरमसुसीला जोनरकथासुर्जे
केगावे वहिविमानवैकुंठमिपावे सूर्जेकथाहैपरमपुनतवानी प्रसुति ९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरषितकरहिभवानी ॥ अस्तुती ॥ नमप्रभुस्वामीग्रेनरनामी स्रोतिक
लाछविदीमह इपनिदानाश्रीभगवाना करहुकृपाहमअपमपहा छ
विस्मोतिविगनेझंडलछाने नवप्रतापहैतीनभुवन महिमाप्रभुतेरीहै
नेपन लियेनामपातकहरन इति श्री सूर्जे महात्म्ये महापुराणे दक्षिणदि
शाराजाहूपमहेसवर्णनोनाम नवमोध्यायः ॥ ९ ॥ चौपई ॥ गिरिजाकह
हिदोनोकरजोरी एकसंदेहप्रोरमनमोरी उत्तरदिशाकहहुउगाहिगु
सोई सोमोहिनाथकहोसमुझाई कहूनलगेशिवकथाविसाला ने
हिविधिउतरगहीछुपाला उत्तरदिशाकारकथाकहानी मनग्रस्थि
रकैसुनहुभवानी तहांशैलएकवडुविस्तारा सोमोजननसोउचपहा
रा कैपैभानुकिरननहिपावै पेहिविधिनगरछेदिग्रारजनावै तहांवा
सकलजगाकरहोई नवसोपापमलेछहोइसोई पहिविधिकवहोउग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्व: ९: ८

हिनभाना मैंतोही ग्रंथकहौंपरवाना एकसमैअवरनअसभएउ ना
रदमुनितहांचलिगएउ देषासकलनगरअंधियारा धर्मकथाकर
नामविसारा फिरफिरनअसकलमुनिदेषा पापसिवायअौरनहीले
षा मनमहनारदकहीविचारा करेंगोएहमनअंधियारा असकर
नारदकोएउजवही नअस्तापदीयोमुनितवही कृष्णवरनभईसवके
अंगा आठोवरनभईसकलतनअंगा कोईनरहाकृष्णसोवाची सवकेकृ
ष्णवरनभोसाची विमलभएतहांनरअरुनारी जातिजातिसवकारहिश
कारी स्तापदईमुनिसूनंएहआए उत्तरदिसाकरअर्थनजाए सनतक
थाआदिनमुसकाने कहागएमुनिउतरवुलाने स्तापितकरीउत्तर।
कहआए अवहमेयहवातजनाए अवकहमुनिमैसकौतोही उत्त
स्तापकवहोरहैवोही कहनलगेनारदमुनिजवही अंगवरनदेषामुनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तवही श्रीभगवानदेषामुनिकैसा मानहुहेमसरोवरनैसा चकित
भयेमुनिदेषकैश्रीभगा निकसोवरनसकलतनुभंगा तनमहकष्टमु
निकरहतभयेउ व्याकुलहोइसनेसोककहेउ अवकरहप्रभुमेरक्षौतोही
केतेदिनश्रीभगवानरहिमोही कृपासिंधुप्रभुपरमअगाथा वस्नभये
तनकेअपनाथा सोमेमोहेनाथकहेसमुझाई नेहितेश्रीभगवानमिटजा
ई तवप्रभुकहासुनहुममवानी उहांकेलोकसकलगुरज्ञानी सवक
हस्रापदियोतममभारी व्याकुलभयेसकलनरनारी सवकरश्रीभगवंता
नसकीन्हा उवरनाइस्रापनसदीन्हा ॥दोहा॥ अवमैकहोनममवन।
कथापुनीतअनेग उअस्रापप्रापनकरहुवरनमिटतवश्रीग ॥चौपई॥
निकटवचननारदमनमाना उनगदिसाकहकीयोपयाना द्वारपाटि
नमहउनरणपेउ उअस्रापमुनिउग्रकीपेउ ॥दोहा॥ नारदउवरनाइकै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सू. स्नानपुत्रग्रहकीहू तेजप्रतापआदितकर हरषितवरनेलीहू ॥ इति श्री
पु. सूर्यमहात्म्ये महापुराणे नारदस्नानपुत्रग्रहवर्नने नाम दशमो ध्यायः ॥१०॥
८ चौपई ॥ अमकरहिमुनिआदितपरणामे उत्तरदिशाकरअर्थनताये स्नान
8 पुत्रग्रहकीहूगुसांई ऐसप्रतापतुमवरनिनजाई अमसुनिआदितहर
षितभयेउ दयालागिनवमुनिसोंकहेउ अवजनिश्रमेमश्रमभुलाहू आ
नीरवादलेहूक्षरजाहू बहुतकृपाभईमुनिपरभारी वरनिनजाइस्तो
तिअधिकारी विदाहोयेमुनिग्रहकहरणामे हरषितहोइसुनेगुनगाये
हरषितमंगलगाववहिनारी धन्यसूनेसबकरहिपुकारी ऐनआदितका
याकेराजा नाकेस्नातिवहूंग्रीरविराजा कोटिविप्रनतहांनेवतनिवाजा
अस्तितिनारदसुनेकेगाथा अथमेधीजनतकरनमुनिलागे तीनोभुवन
केदलरभागे सबकहूनारदनेवतपठाये रथचढिदेवतहांसबआये ८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ब्रह्मादिक सब आये त्रिपुरारी आये सकल सहित नरनारी बहु प्रकार सुनि स
बहि नि वाये हरषित होइ सूर्य गुन गाये हरषित मंगल गावें नारी ब्राह्मण
वेद पढें नेंनें कारी अनंत वेद न पान पकवाना इनाकर हिय रहि गुनि गा
ना हरषित होइ सूर्य गुन गावा ता लप धावन सेघ वनावा ॥दोहा॥ जगपा
कौनो मुनि नारद सो भावर नित जाइ तेतीस कोटि देवता हरषि कथा सु
न गाइ ॥चौपाई॥ जो नर धरे कथा पर ध्याना तो कोहोइ सुभ कल्याना जो इह
कथा पढे मन लाइ ता पर आदित होहि सहाइ धन प्रताप आदित बलवाना
तेन अन्न पान सब आदित समाना ॥दोहा॥ गिरिजा शंकर हित सेंध सनु सूर्य चरित्र
मन लाइ दछिन दिसा करा उग हौं ताथ्य कहो सब गाइ ॥इति श्री सूर्यमहा
ते महापुराणे नारद जग पु सो भावर नो नाम एकादशो ध्यायः ॥११॥चौपाई॥ कहै
श्रीभगवन सै लक समभी सूर्य चरित्र मैं कहौं विचारी कहन लगे शिव कथा
सुहाई जेहि विधि दछिन उग हीं गुसांई दछिन दिसा पकन ग्र आ वा पाने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

म॰ पु॰ ८

हरषितमननकरैरदिनराती नहांरहहरिग्रारदिनवहभांती परिहिविधि।
प्रभुकैरस्पतिविरानै ग्रनहरनारद्वराधुनिवानै नैनीसकोरीदेवनानहो
श्रीजगन्नाथकेग्राश्रमनहो दच्छिनवसहिकासोप्रयागा नहांवसहिस
वलोकसभागा सहोद्रावलिभद्रतहांसगा नहांवसहिसरस्वतीगंगा कृ
पासिंधुप्रभुपरमउरागा यानिसदिनभननकोरअपराधा ॥दोहा॥ दच्छिदिसा
धुनीनहैमननहरउमाविलसार ग्रागिलग्रंथनमहोरहैसोकहोविकार ॥३॥ इ
ति श्रीस्वर्जेमहात्म्येमहापुराणेदच्छिनदिसायात्राजैमतविप्रकथावर्णनोनामद्वा
दशोध्यायः ॥१२॥ चौपई ॥ कलियुगनहोरजवजेहै मानुषकेनवमा।
उष्ठपैहै नवप्रभुलीहैग्रवतारकलंकी मानुषतननवहोरहैपंकी
दच्छिनदिसारविउगीहैनार ग्रागोलग्रंथकहोसमुकार धर्मकथावलि
हैवहुभांती नेमधर्मकरिहैदिनराती विप्रनिवारग्रापुतनेरहै निरवै
नामस्वर्गकेगरहै लच्छमीबाघारकरहिनिवासा धर्मकथानहांहोरग्र ८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गाला मिथ्यावचनकोईनहिभाषै निसदिनटेकमनेपरगाषै धर्मविचारस
नेतहेकरीहै द्वादशकलासोतिनहांधरीहै ॥दोहा॥द्वादशकलालैउगीहैद्वा
दशतनवहीग्राइ पुरवलीजन्मकेपातक कथापढतछेजाइ ॥चौपई॥आ
गिलग्रंथग्रंथेटेकिमनावा सनिगिरिजाकेमनअतिभावा मगनभयेसुनि
शिवकीवानी हरषितसुनेगुनकरहिभवानी तीनभुवनजेहिनावेमाथा
सोप्रभुकहिअनाथकेनाथा जोरहकथापढेमनलाई वाढेधर्मपापछेजा
ई॥दोहा॥जोरहकथामनलाइकेटेकधरेअतध्यान जोरछ्याकरपेईनरसु
वहिस्रीभगवान॥इति श्रीस्कंदेमहात्म्येमहापुराणेकलेकीश्रीरवरनेनामत्र
योदशोध्यायः॥१३॥अथ माहात्म्यः॥ जोकार्तिकमासप्रथमजोरहई ती
नपत्रतलसीदलखाई अगाहनमासध्यानजोधरई सकरवारीभोजन
करई पुसमासजोप्रानीरहई तीनउवकेभोजनकरई माघमासकेस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नोविचारा तिलखंडकैकेरेग्रहारा फागुनमाससेनोइहिविधिरहै द
हीखंडकेडिगहोइरहै चैतमासकेसनहुविचारा छृतग्रैनलीभरकेरे
ग्रहारा वैसाखमाससेनोग्रानीरहै अमलनामचारीसोरहै जेठमासके
सनोविचारा ग्रैनलीलीनजलकेरेग्रहारा आषाढमाससेनोग्रानीरहै
नीनमीचकेभोजनकरै सावणमासकेइहव्यवहारा कपिलागऊमूत्र
केरेग्रहारा भादोमाससेनोइहविधिरहै गुडखंडकेढिगहोइरहै क्वा
आरमासकेइहव्यवहारा चंदनखंडकेकेरेग्रहारा॥इतिश्रीव्रतमहात्म्ये
सेहर्गः॥इतिश्रीसूर्जउराणसमामः॥५॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ध. सं. १

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ धर्मसंवादभाषा लिख्यते ॥ राजाजनमेजयउवाच ॥ ॐ

द्वापुरविषैकथाहोतभई नगरजोहै हस्तनापुर दिल्लीकेपास ति
सविषैपुरंनेकोलोंहस्तकतभया राजाजनमेजै राजेपरीक्षितकावेटा
पांडवोंकापौत्रा किहैवैशंपायनजी राजेधर्मकापुत्र युधिष्ठिरकामि
लाप कौंकरहूसुनाथा सोनमहाकृपाकरकहोजी वैशंपायनउवाच ॥ रा
जेकावचनसुनकर श्रीव्यासदेवजीकाशिषजोहै वैशंपायन सोकथा
कहतभया हेराजाजनमेजऊ एकसमेजोहैदेवते अरुइंद्र अरुमुनीश्व
र अरुब्रह्मा अरुरिषि अरुविष्णु अरुसर्व अरुचंद्रमा अरुदिनकरक
अरुसरस्वतीजी अरुगंगाजी अरुजमुनाजी अरुगंधर्व अरुविनासपती
इहसमभइकठेवैठेथे तहांनारदजीमोरिषिहै सोजायप्रापतिभया त

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

होनाइकर नमस्कारकरतभया अरुवचनकहनेलागा। नारदउवाच
नारदजीकहतेहैं सौदेवतौंकेबीच शंकरजीकानामहै अरुब्रह्मावि
स्नुमहादेवहै सौंमातलोकविषे राजायुधिष्ठिर धर्मकापुत्रहै तिसकौ।
त्रिलोकीविषेकीरतिगावतेहैं सोऐसाराजा नकोईआगेहोयाहै नको
ईहोवेगा सोकैसाहैराजायुधिष्ठिर समबादीहै जिसराजेनेक्रोधजीता
है अरुधर्मात्माहै अरुसीलवंतहै जिसराजेकेतुल्यऔरकोउनाहीं जो
राजाधर्मकापुत्रहै और जोवडेराजेहोएहैं सोकौनराजेहोएहैं राजावेण
राजाहरीचंद राजावईलोचन राजानल राजानहुखोष राजामानधाता
जुगजुगविषेवडेराजेहोएहैं अरुराजायुधिष्ठिरबराबर तिनकाजस।
नाहीं नवराजाधर्म नारदजीकेवचनसुनकर हर्षवानहोतभया ८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र. से. २

2

सीढोइकर विचारकर्के मातलोकविषेआइआसभया अरुनगरकेद्वार
जोहैं सोदेषनेलागा आइकरक्यादेषैजोवहुतनिर्मलहै लोकोंकेद्वारव
डेसुंदरहै अरुदुषीकोईनाही धर्मात्मेहै कैसाभवनहै मानोकेवनकी
न्याईहैं अरुसभनेकीन्याई उनकीसोभाहै मानोस्वर्णमासीकावंदमेजे
सेनगरहै देषकरराजद्वारेजाइआप्राप्तिभया दरवानकोकहतभया हेदर
वानतूंकैसाहै सभनाथासोंनोजाननहारा है अरुराजेकाइतवारीहै इह
ववनसुनकर भीमसेनजोद्वारपालथा सोबोलतभया भीमसेनउवाच
हेप्रतिकिधर्मात्मायाहै इष्येकौंकरआयाहै तेरीजातभीनाहीजानीजाती
तेरेकौनहै राजाजीमंदिरविषेहै तिहलोकोविषेजानियाजाताहै धर्मके
धर्मकामंदिरहै तेरेकौंकरनाहीजानजा राजद्वारेकौंकरआयाहै वेउ २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लउवाच॥ हे भीमसेन मैंने काशीखंड वारको सनलगा सुनीता है अब मै उचार
नता है तिस काशीखंड वागमवनों में सुनीता है दाना जो है दान करन हारा सो ति
हलोकों विषै सुनीता है भीमसेनउवाच॥ भीमसेन कहता है कि हे वेताल
अठासी हजार ब्राह्मण नित प्रति प्रातःकर स्वर्णके पात्रों विषै भोजन करा।
ते हैं अब वाना जो है सो मै सब की भाई वरसता है अब जो अष्टादश विषै आवै है
अथवा वेताल होवै अथवा ब्राह्मण छत्री वैश शूद्र इनों विषै के नारी तेरा
कोन वर्ण है वेतालका सुभ रितिसै है नव मप होवै नवब्रन राषै सो वेतालना
लगलकरे तो मप होवै वेतालउवाच॥ हे भीमसेन तेरी मेरी तवा पक है
अब मल मूत्र पक है अब मपट षपक है अब मामसे पक है अब पंजे है दोषा
पक है वर्णवारवौं कर श्रेष्ठ है भीमसेनउवाच॥ हे वेताल तेरी गर्दनले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प. मे. ३

3

वीहै गारयक्कीग्याईहै साफक्करेकीग्याईहै हाडमाससनेविवर्नतहै वे
दशैवाव॥ निंदक अरुचुगल अरुपरायाकीनानाजाने अरुपरायाधनचु
रावै पद्रवारवेशलहै पंनवाजानवेशलै जोत्रिकालसंध्यातेरहितहोवै
वेदतेरहितहोवै जोब्रह्मणकर्मातेहीनहोवै सोवेशलकारूपहै जोइस्नान
करेबिना दांतनकरेबिना पैरधोनेबिना जोकोईभोजनकर्ताहै अरुठा
कुरजीको भोगलगायेबिनाषावै अतीतबिनाषावै सोवेशलकारूप
है कपिलागऊकादूधअनछानपीवै अरुब्रह्मणीसाथदुराकरेना
अरुवेदकेअंतरनविचारने सोभीवेशलकारूपहै हाथीकादानले
वै सोभीवेशलहै उपहरी अरुत्रिकाली अरुसंध्या दरविषेभोगकरे
तमेबिना सोभीवेशलकारूपहै अरुजोकोई मिठीवस्तरकेलाषा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वै सोभी वैडाल का रूप है अरु जो गऊआं पाणी पीवन आवन अरु उनां
को हटावै सोभी वैडाल का रूप है इस्त्री विवाही होवै भले कुल की अरु
लज्जावान होवै वैगर दोष छडि देवै बिना उसका त्याग करे सोभी वैडाल का
रूप है अरु जो पक्षु क्रूप होवै अरु दोइ स्त्रीआं होवन इकनाल प्रीत करे अ
रु इकनाल न करे सोभी वैडाल का रूप है हरते अथवा नेड़े ते अतिथ आ
इ प्राप्त होवै अरु जो यथा सक्त न देइ अरु पाप पावै सोभी वैडाल का रू
प है अरु उह वै नवे मम हीने नाल इस्त्री होवै अरु पाप रक्षी वलपावै उ
सको न देवै सोभी वैडाल का रूप है पंछीयां विषे कांउ वैडाल है प
सूआं विषे गदेव वैडाल है नदीआं विषे कोय वैडाल है अरु मात्रुवां
विषे वैडाल वैडाल है हे देवगान तेंगनात्रु पिपिछिरयाम जाइ करकै

प्र.
सं.
५

५

जोएकवेश्यालहोरेपरपडताहै अरुगुनीहै भीमसैनजिह्वा जोमनकहता
है जाइकर राजायुधिष्ठिरकोकहतभया हेराजाजोएकमंगलाद्वारेपर
आइआहै मेरेपरक्रोधनाहीकरना पदनीकेसाहै आनन्ददासीहै इसका
दोषनाही युधिष्ठिरउवाच। हेभीमसैनकौंकरआयाहै अरुक्याकाम।
है क्याकहताहै॥ भीमसैनउवाच॥ हेराजाजी तमसबु एकवेश्यालहोरे
परअछेवचनकहताहै मेरेसंगहासानकरतभया अरुविद्यावानहै यु
धिष्ठिरउवाच॥ हेभीमसैनउसकाकारुपहै किसतरांदामउघहै कौं
करशास्त्रजाननताहै द्वारेविषेजोवेश्यालएशाहै भीमसैनउवाच॥ हेरा
जाजी कोकला अरुकाउकेवर्णहै हरनकीन्याईतिसकेनेत्रहै अरु
ग्रीवालंबीहै अरुवडेपैरहैन॥ युधिष्ठिरउवाच॥ तिसकेग्रहविषेअन्न ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नहोवै अरुअर्थितआवै तोउसकोकाहदेवै अनीतउवाच॥ आवला अ
थवा भेर अथवा पत्रैजैसीशक्तहोवै तैसीउसकोदेनाकैरे अरुजोहोवै
पत्रप्रतिष्ठहोवै अरुयाणघ्राइनिकलै पानीदाउवराबरहै अरुयत्नमा
सकेवरोवरहैतिसको अरुजोअर्थितपैवेनावै तोपितरअरुदेवतेपैवे
नावन अरुजोपिछलेकर्म तिसकेकरेहूएहैं समपैवेनावन अरुजोअ
स्नानदानतिर्थाणहोवै अरुजोसेवादेनाकैरे अरुभावनाकैरे तोतीर्थों
काफलप्राप्तिहोवै वैरमेंत्रजोहोमकैरे तिलोंबिनाआहुकैरे अरुहव
रविशिवालकोवितवैनीहोवै तोभीसतोऊलानूसारै अथवाविगदा अथ
वाऊना अथवास्तकर तोअश्वमेधजगकाफलहोवै माहपात्रविषेपारक
रउनकेआगेराखीयेपा॥युधिष्ठिरउवाच॥ हेअनीतरहयमेकियोंपैदाहोइ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यु॰ ग्राहै अरु केशपर्मवर्ननेदाहै अरु केशयमेंथापिग्राहै अरु कोपदुरथीजोप
स॰ मेंहै तिस्कानामकहीये परदेसविषेकौनमित्रहै घरविषेकौनमित्रहै
५ अरु मरणसमेदाकौनमित्रहै अगनीतउवाच विद्याजोहै सोपरदेसविषे
मित्रहै अरु इस्त्रीजोहै पतिव्रता सोघरविषेमित्रहै दानपुन्नजोहै सोअंत
समेदामित्रहै युधिष्ठिरउवाच॥ केशीमनुष्यप्रसनपवर्ततेहै केशीमनुष्यसुखियार
है केशीमनुष्यन्नहीवेदनाकरीये॥ अगनीतउवाच॥ अस्मातेउत्पतिहोईस्त्रीसि
नहीवेदनकरीये गायत्रीअरु तीर्थंगवनकियेकाकापुंनहै अरु जोचारवि
षेप्रायश्चितहीसमाकरै अरु भजनकरे तिसदाकापुंनहै अगनीतउवाच। जेवे
हपर्वविषेदानकरे तोलखगुनपुंनवधताहै अरु जोसूर्जपर्वविषेदानक
रै सोदसलखगुणावधताहै अरु तीर्थोंविषेजोपुंनकरतेहै सोलखगुणा। ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धनाहै अरुजोघरविषेभलीभांतिपूजनकरताहै सोदसकोटिगुणावध
ताहै॥ युधिष्ठिरउवाच॥ बनारसविषेजोनारइपूंजनकरै तिसकाकाफलहै अ
रुगंगाजीकेस्नानकाकाफलहै अनीतउवाच॥ बनारसविषेनारइनो
वडापूंजनहै अरुजोगंगाजीके स्नानकियेते जमकीत्रासनातेरहितहो
इ गंगाजीकेस्नानकरनेकर पापोंतेमुक्तहोताहै अरुगयाविषेपिंडदेने
कर पितरसोस्वर्गविषेनाइप्राप्तिहोतेहैं युधिष्ठिरउवाच॥ जिसकेग्रहा
विषेपिताभीनाहोवै अरुमाताभीनाहोवै अरुभाईभीनाहोवै तोउसको
कौंकरसुखहोवै अनीतउवाच॥ दुधकोमाताकरजानै अरुज्ञानकोपिता
करजानै दयाकोभाईकरजानै तबशांतिइसकोहोवै कदलोंजदलोंनिर्म
लमनहोवै युधिष्ठिरउवाच॥ किसकर्मकरिउधीहोताहै किसकर्मकर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पं. सं. ८

गर्भ विषे ॥ फिर फिर जन्म लेता है ॥ प्रतीतउवाच ॥ देवतों का धन जाना कै
जो दुखी होता है जो अन्न दान नहीं करते ॥ सो गर्भ विषे ॥ फिर फिर आवते हैं ॥ अ
रु जो पराई इस्त्री विषे मन देते हैं ते महा घोर नरक विषे फिर फिर मरते जन्म
ते आवते हैं अरु जो देवतों को धन जाना कै अरु दान देवै उसको महा अरु आयुर्ब
लावत नहीं है युधिष्ठिरउवाच ॥ माता देनर्द्ववा के पिता जिमतकुमारका ब्रह्मा वेक
इहे स्वतत्र आक समदेह हो सकुट धवे प्रतीतउवाच जो तिलों विषे तेल होता है
जैसे काठ विषे अग्नि होती है सो देह विषे आत्मा है कैसे जे मेंडुप विषे घी है
युधिष्ठिरउवाच ॥ हे प्रतीत अग्नि होत्र का वेला कहोया है ते आरके अपित आस
होया है अरु मैं जो हां सो तेरी इस्त्री जाकर तो हां प्रतीतउवाच ॥ मैं जो हां सो कि
से दा भोजन ना नहीं करदा अरु ताजे देवतों विषे भोजन ना नहीं करदा अरु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राजेकेअन्नविषेदोषहै युधिष्ठिरउवाच ॥ हेअतीतभोजनक्यौंनाही
करते ॥ इसअन्नकोकौनदोषहै क्यौंवरजतहै अठासीहजारब्राह्मण
नित्यप्रतिअन्नभोजनकरतेहै मेरेग्रहविषे अतीतउवाच ॥ मायाकेलो
भकरके मोहिछुटेहैं कैसीहैमायाजिसनेत्रिलोकमोहिछोडियाहै हे
राजाजीपहुगलमतिहै राजेकाअन्नजोहै सो महाअपवित्रहै हेराजा।
जोशूद्रकामासखाराभलाहै परराजेकाअन्नभलानाही विषसमा।
नहै हेराजा जैसेजैसेनदीयोंकाजल समुद्रविषेजाइपडताहै तैसेरा
जेकेग्रहविषसभकिसेकाधनआइपडताहै सोलेनेयोगनही महामंत्र
करिकेमथहोताहै जैसेदसमनअन्नहै तैसाएकऊमिश्राहै जैसेदसऊ
मिश्राहै तैसाएकपोथीहै जैसेदसपोथीहै तैसीएककवेसवा जैसेदसवे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र. सवा तैसे पेक्षरा नेकाहानहै इनने वचन कहकर उठषडा होइआ रा
से. जा चिंतामान भया ॥ अरु जो ब्राह्मणने बाणआपे थे सो सभ ही उठ गए थे
८ अरु दासी हनार ब्राह्मणनो था अरु तिनां विषे राजा नमक होइ क्रोधके व
7 वन कहने लगा ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हे प्रतीत मेरा जगत हूर कीता है अ
रु सभ ब्राह्मण उठ गए है हे प्रतीत मैं आप अथवा जग किसथों करा
वां अरु इसना किस दी करौं जो मैं कर्म कीए थे सो सभ विरथे होइ है न
चिंतावान होइकर युधिष्ठिर कहत भया ॥ प्रतीतउवाच ॥ अथवा वे डाल
अथवा विला मरण मरभा षवे मे सार विषे भावना करनी सोई सनेह
है जो पापी होरे आवै अरु कोई हत्याकरि आवै जो बारह वर्ष विषे कीता
होवै अरु अयिन कोइ सैजे नाही सो सभ निरफल है हे राजा जी मैं सतिक ८

निकहिआहै मेरेतांईसोसुनाहोदेवता हाडके महीनेमें कातकमें मा
घमें वैसाखमें स्नानदानकरै सोगतसोपसुअंपंछीहै युधिष्ठिरउवाच ॥
हेप्रीतनेसोहै सोमेरादेवहै मैनोहांसोपवेमानदाहो मेराजनगाविर
थागया परमेसफलहोइआतेनादरसनकरके अकतेअथिनदेवहै ते
रावेंशलकाइपहै अकमेरेघरतेआयाहै हेअनीत इकेनातेइहैहै इके
नातेअद्याहै अथवाविसमेहै तेंनोहै वेशलकाइपधारकर मेरापिता
आयाहै धर्मउवाच हेपुत्रयनहैतेपनहै समनाशास्नोइमानतेवाला
है हेरानामेतेरापिताहो अकतेपुत्रहै हेरानातेसतिनाव हेरानाते
सायहै तेरानन्मयनहै तेरावेसपनहै तेराकुलयनहै तेरानसमेसा
निआसीस्वर्गविषे मेतेरादरसनकरनेके तेरेघरविषेआयाहों निस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ध. सं. ८ 8 ग्रथं जो गंगु नकरदा सो सो देवताने रेवरविषे आया है युधिष्टिर उवाच
आन्नमेरान नल्म सफलहै आन्नमेरीतपस्या सफलभईहै आन्नमेरा
जन्मभी धनहै तेरादरसन कीताहै मैपापांतेमुक्त होयाहां धर्म उवाच
हेराजा जीतेरी आरवला बहुतहोवै पोंडुपुत्रने विरंजीव होहु इहुधा
हूकरके राजाधर्म देवलोक को गया धर्म करकै पाडुभी हूर होंदे हैं धर्म
करकै ग्रहभी हूर होंदे हैं निश्चे धर्म है निश्चे दया है ॥ इति श्री धर्म सं
वाद भाषा समाप्तम् १ श्रा॥॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं. ७५५ - क

१। [illegible]

पत्र १०

२। [illegible]

पत्र ८

कुल १८

[illegible]

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri